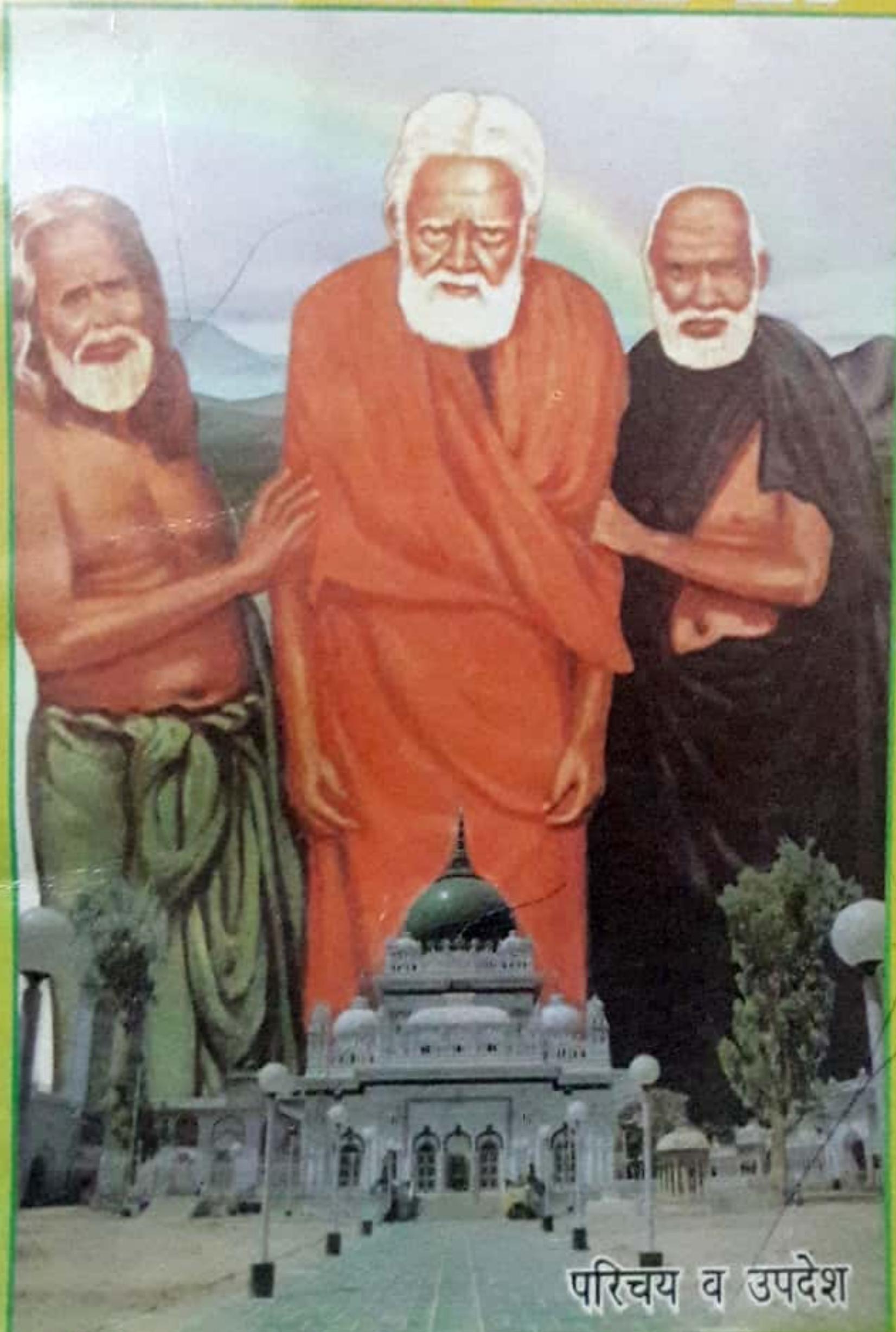


હજરતે વારિસ ચરાગે ખાનદાને પંજતન
ખાનદાને પંજતન નામો નિશાને પંજતન

યા વારિસ **ગીતની દાતા વારિસ પાઠ**



પરિચય વ ઉપદેશ

सलाम

अरस्सलाम ऐ वारिसे अली मुकाम ।
 अरस्सलाम ऐ हज़रते खैरुल अनाम ॥
 अरस्सलाम ऐ नासिरो फरयाद रस ।
 अरस्सलाम ऐ बेकर्सों के दाद रस ॥
 अरस्सलाम ऐ गमज़दों के चारा साज़ ।
 दस्त गीरे आसियां बन्दा नवाज़ ॥
 दिल में है लाखों तमन्नायें मगर ।
 अर्ज़ मैं क्या-क्या करूं अल्मुखतसर ॥
 पंजतन का वास्ता ऐ हक नुमा ।
 इक नज़र वह चाँदसा मुखड़ा दिखा ॥
 दस्त गीरी कीजिये बहरे खुदा ।
 वास्ता हसनैन आली जाह का ॥
 ऐ सखी, इब्ने सखी, इब्ने सखी ।
 लाज तेरे हाथ है मुहताज की ॥
 बेकर्सो मुहताज हूँ ऐ जी असास ।
 तोशये उक्बा नहीं मुफलिस के पास ॥
 जब दमे वापसी हो ऐ जाने जहाँ ।
 नाम नामी हो तेरा विरदे जुबाँ ॥
 मुँह न देखूँ दीनो दुनिया का मगर ।
 हो रुख़े ज़ेबा तेरा पेशे नज़र ॥
 नज़आ में तुमको न भूलूँ वारिसा ।
 याद हो दिल में तेरी ऐ महलका ॥
 है तमन्ना ऐ शहे आली गुहर ।
 हो दमे आखिर तेरे कदमों पे सर ॥
 हो करम अब शाकिरे नाकाम पर ।
 ख़ातमा हो आपही के नाम पर ॥

बाबा शाकिर शाह वारसी (रह0)



या वारिस पाक

हद पिये तो औलिया, बेहद पीये तो पीर।

हद बेहद दोऊ पीये तो उसका नाम फ़कीर॥

अर्थात् फ़कीर बहुत कम होते हैं औलिया और पीर बहुत होते हैं। वारिस पाक सही मायनों में सच्चे फ़कीर थे। पूज्य वारिस पाक के अतिरिक्त ये बात मैंने किसी अन्य फ़कीर के बारे में न पढ़ा है न सुना है।

या-वारिस

सिर यहाँ जिसने झुकाया वह नेक-अन्जाम।

दीनो-दुनिया के सभी बन गये बिगड़े हुए काम॥

कोई दुनिया में तअल्ली से न मुमताज़ हुआ।

सर यहाँ तू ने झुकाया तो सरफ़राज़ हुआ॥

शैदा-मियां वारसी

नफरतों के इस दौर में संसार को प्रेम का संदेश देने वाले महान सूफी फ़कीर हाजी हाफ़िज़ सैयद वारिस अली शाह रहमत उल्ला की शान में एक छोटी सी परिचय पुस्तिका आप लोगों के बीच में है। इस परिचय पुस्तिका को छापने का मक़सद देश-विदेश से आने वाले जायरीनों को सरकार वारिस पाक की शिक्षा और उनके परिचय कराने का है। किसी को सरकार वारिस पाक की शिक्षा और उनके परिचय कराने का है। किसी प्रकाश पुंज के बारे में कुछ लिखना इंसान के बस की बात नहीं। वो उतना ही लिख सकता है, जितना अल्लाह की तरफ से इशारा हो और फिर सरकार वारिस पाक के बारे में लिखना जो कि पैदाइशी वली-हाफ़िजे कुरान थे। जिन्हें कि अल्लाह का नूर प्राप्त हुआ। उनके बारे में कुछ कहना सम्भव नहीं। सरकार वारिस पाक का लौकिक जीवन पूर्ण रूप से अध्यात्म सम्भव नहीं। सरकार वारिस पाक का प्रेम का संदेश देकर ईश्वर के मार्ग पर का युग था, जिसने पूरे संसार को प्रेम का संदेश देकर ईश्वर के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया। सरकार वारिस पाक इस संसार में ईश्वर की एक ज्योति के अंश के रूप में मानव रूप धारण कर प्रकट हुए थे और

संसार को अपनी चमक से दर्पण की भाँति चकित कर गये। उस ईश्वरी ज्योति ने विश्व को अपने महान सन्देश सुना-सुना मोहब्बत करो मोहब्बत को कोई हानि नहीं पहुँचा सकता, मोहब्बत है तो हम हज़ार कोस से तुम्हारे पास हैं देकर संसार में प्राण फूंक दिया। लेकिन अल्लाह के इस संसार को बनाने के पहले अल्लाह के सबसे प्यारे फ़रिश्ते ने एक प्रश्न किया था कि ए अल्लाह! "तूने इस संसार को बनाया और अपनी सबसे सुन्दर खूबसूरत कृति इंसान को बनाया लेकिन ये इंसान जो है धरती पर जब जायेगा तो झगड़े फसाद पैदा करेगा?" तो अल्लाह ने जवाब दिया — "ऐ फरिश्ते! मैंने नेकी और बदी दो रास्ते बनाये हैं और इन दोनों रास्तों में से हमारे बनाये नेकी के मार्ग पर जो चलेगा उसकी इज्जत हमारे यहाँ तुमसे ज्यादा होगी।" इस पर भी अल्लाह का प्यारा फरिश्ता सन्तुष्ट नहीं हुआ तो अल्लाह ने उसको अपने बनाये मानव रूप में नबियों और वलियों का रूप दिखाया और कहा कि हमारे भेजे गये इन दोनों लोगों के भी बताये गये मार्ग पर जो चलेगा वह हमारे यहाँ प्यारा होगा और मैं उनको आखिरत में खूबसूरत नहरों में दाखिल कर दूँगा। इसीलिए अल्लाह ने संसार में जब चारों ओर नफरतों का दौर चल रहा था तो अपने प्रकाश पुंज से संसार को महान सूफी फ़कीर सैय्यद हाफिज वारिस अली शाह रहमत उल्लाह के रूप में एक ज्योति को भेज दिया आईए हम सब मिलकर इस महान सूफी फ़कीर की शिक्षाओं को ग्रहण कर अपने जीवन में उतारकर अल्लाह के मार्ग पर चलें। इस किताब की अन्दर की सामग्री पुरानी मिश्कात हक्कानिया उर्दू से ली गयी है, जिसका हिन्दी अनुवाद सरकार के आशिक मरहूम अमानतुल्लाह खाँ साहब वारसी ने किया है, जिनका मैं शुक्रगुजार हूँ। इस नये एडीशन में 16 नये पेज बढ़ाये गये हैं व मेरी नई पुस्तक सफरनामा वारिस-ए-पाक प्रकाशित हो चुकी है, जिसमें वारिस-ए-पाक से सम्बन्धित कुछ नई जानकारियों उपलब्ध हैं, जिसे आप पहले की ही तरह कुबूल करेंगे। अगर इस किताब को लिखने में कोई त्रुटियाँ हुई हो तो मेरी सामान्य दुर्बलताएँ हैं और जो कुछ अच्छा लिखा हो वह ईश्वर की विशाल अनुकम्पा व वारिस पाक का करम है।

मनीष मेहरोत्रा

कटरा 204, वारावंकी

मोबाइल : 9795377707

प्रारम्भ : गुरुवार दिनांक 24.10.2002

50वां नवीन संस्करण दिनांक 06.10.2017

या वारिस पाक “पवित्र नाम”

आपका पूणि नाम वारिस अली शाह है। आप जन्मजात ईश्वर अनुरागी थे। अतः आपका जीवन ईश्वर अनुराग से आरम्भ होकर ईश अनुराग में ही तिलीन हो गया। आपका वारिस नाम ही अपनी भरपूर विशेषताओं के साथ जनप्रिय और प्रसिद्ध है। यह भी विदित है कि प्रारम्भ से ही आपने ‘मूतू भिन कबले अन् तमूतू’ (मृत्यु के पूर्व ही मर जाओ) अर्थात् मरने के पूर्व मृतक जैसा हो जाने का गन्तव्य रथान आपको प्राप्त था अपने शिष्यों को भी आप यह उपदेश देते रहे। तात्पर्य यह है कि सरकार वारिस पाक को मोकामे बका अर्थात् अमरत्व प्राप्त है। जो शब्द वारिस पाक के लिए सार्थक है। जिसने आपका दर्शन किया तत्काल ही बोल उठा —

इस तरह भेस में आशिक के छुपा है माशूक।

जिस तरह आँख की पुतली में नज़र होती है।

आपका सुप्रसिद्ध नाम हाजी हाफिज सैय्यद वारिस अली शाह रहमत उल्लाह है। आपके श्रेष्ठ नाम को यदि खानदानी नसब के अनुसार देखा जाये तो अति सार्थक है। आप मुहम्मद साहब के खानदान के दीपक हैं। आपको मुहम्मद साहब से वरारत्न आन्तरिक ज्ञान तथा अध्यात्म प्राप्त है। साथ ही आप अली की औलाद हैं। अतः अली मुर्तजा के आन्तरिक ज्ञान के वारिस हैं।

जन्म तथा पारिवारिक क्रम

आपकी जन्मभूमि होने की प्रतिष्ठा करखा देवा शरीफ को है, जो जिला बाराबंकी उत्तर प्रदेश का एक ऐतिहासिक उप-नगर है। आपका जन्म 1234 हिजरी, सन् ईसवी के मुताबिक 1819 ई० है। आप इमाम हसन महोदय की छब्बीसवीं पुश्त में भूतल पर पधारे हैं। आपकी वंशावली निम्न है। सैय्यद वारिस अली शाह आत्मज कुर्बान अली शाह आत्मज सलामत अली आत्मज करमुल्लाह, आत्मज जैनुल आबदीन आत्मज सैय्यद उमर शाह आत्मज अब्दुल वाहिद आत्मज सैय्यद अब्दुल आद आत्मज सैय्यद अलाउद्दीन आत्मज अज़ीजुद्दीन आत्मज सैय्यद

अशरफ अली तालिव आत्मज सैयद मुहम्मद महसुफ आत्मज अबुल कासिम आत्मज सैयद अली असाकरी आत्मज सैयद अबू मुहम्मद आत्मज सैयद मुहम्मद जाफर आत्मज सैयद मुहम्मद मेंहठी आत्मज सैयद अली रजा आत्मज सैयद कारिम हमजा आत्मज सैयद मूसा काज़िम आत्मज सैयद इमाम जाफर आत्मज इमाम जैनुल आवदीन आत्मज इमाम हुसैन आत्मज हजरत अली शेरे खुदा पति० सैयद फातमा पुत्री मुहम्मद मुरतफा (सल्ल०) साहब ।

खानदानी महत्व

सैयद खानदान का एक विशेष सम्मान

यह भी है कि हुजूर के महान पूर्वजगण ने कभी दूसरे खानदान में ब्याह-शादियाँ नहीं की हैं और नेशापूरी सैयद वंश के मान-सम्मान को सुरक्षित रखा है ।

आपके परदादा सैयद करमुल्लाह साहब के तीन पुत्र सैयद बशारत अली साहब, सैयद सलामत अली साहब और सैयद शेर अली साहब थे । आपके पिता कुरबान अली साहब का विवाह उनके चाचा शेर अली की पुत्री से हुआ था । इस प्रकार दोनों पक्षों से हुसैनी होने का विशेष सम्मान प्राप्त करते हैं ।

अवध के महान लोगों, शरीफों में आपके खानदान को विशेष रथान और सम्मान प्राप्त था । आपके पूर्वज वाह्य ज्ञान तथा आन्तरिक ज्ञान में निपुण होने के कारण विशेष सम्मानित रहे । आपके खानदान के श्रेष्ठ पूर्वज मख्दूम अलाउद्दीन आला बुजुर्ग नसीरुद्दीन चिराग देहलवी के खलीफा थे और शिक्षा में अबुल बरकात व शेख यहिया के शिष्य थे । आपेक पूर्वज हर ज़माने में नेक, पवित्र और सम्मानित रहे । अच्छे सन्त और फ़कीर सदैव ही आपके खानदान में होते रहे हैं और साधारण जनता उन फ़कीरों के यश से लाभान्वित होती रही है ।

भारत वर्ष में सर्वप्रथम आपके पूर्वज ने रसूलापुर किन्तूर में निवास किया है यहीं से एक बुजुर्ग अब्दुल अहद साहब ने देवा की भूमि को पवित्र किया । यहाँ देवा में आपकी 5 पुशतों बीतीं और सरकार वारिस पाक ने

जन्म लेकर अपने कमलवत चरणों से इस भूमि को गौरवमयी और पवित्र कर दिया। आज भारत तथा संसार में ये करखा देवा शरीफ के नाम से पुकारा जाता है। सहस्रों लोग दर्शनार्थ संसार के कोने-कोने से पधारते हैं।

बचपन

हुजूर वारिस पाक की पैदाइश रमज़ान के महीने में हुई। आपने दिन में कभी दूध नहीं पिया। यह चर्चा औरतों में फैल गयी और चारों ओर घरों में स्त्रियाँ इस बात से अचम्भित थीं, देखा गया कि आपने दिन में रोजे रखे और रात्रि में दूध ग्रहण किया। यहाँ तक कि आपने मोहर्रम की दसवीं तारीख को कभी दूध नहीं ग्रहण किया। यह सब कुछ होते हुए भी आप अपने समकालीन शिशुओं से अधिक स्वरथ थे, शारीरिक बढ़ाव तेजी पर था। अन्य बच्चों से दुगने मोटे ताजे दिखाई पड़ते थे। आपका पवित्र सिर सदैव अन्य बच्चों से ऊँचा दिख पड़ता था। आपका सम्मान आपकी माता द्वारा भी अधिक था। माता जी बिना वजू (हाथ पाँव धोये) कभी आपको दूध नहीं पिलाती थीं। यहाँ तक कि कभी आपकी ओर पीठ करके न खड़ी होतीं, न बैठती थीं।

माता-पिता का स्वर्गवास

विश्वसनीय लोगों का कहना है कि जब सरकार वारिस पाक की उम्र अभी तीन वर्ष भी पूरी नहीं हुई थी कि आपके माता-पिता मान्यवर कुरबान अली शाह साहब का स्वर्गवास हो गया और कुछ दिनों के पश्चात् आपकी माता जी भी परलोक सिधार गयीं।

शिक्षा तथा पठन-पाठन

हुजूर वारिस पाक जब 5 वर्ष की आयु को पहुँचे तो रस्म, रिवाज के अनुसार बिरिमिल्लाह के बाद आप मकतब में बिठाये गये। आपकी तीव्र और विलक्षण बुद्धि तथा प्रतिभा को देखकर गुरुजन अचम्भित हो जाते थे।

आपका ज्ञान ईश्वरीय देन है। बड़े से बड़ा ज्ञानी अथवा पण्डित जो भी आपके सामने आया सबने आपकी योग्यता और स्मरण शक्ति को

स्वीकार किया और आपकी महान योग्यता के समक्ष नत्मरत्क हुआ। अधिकांश देखा गया कि पाठ लेने के पश्चात् आप जंगल-मैदान की ओर चले जाते थे और पूरा समय एकान्त में व्यतीत हो जाता था। जब आपकी उम्र दस वर्ष के लगभग हुई तब आपके स्वतन्त्र मन और मरित्पक ने इसको भी स्वीकार नहीं किया और आप सम्पूर्ण सम्बन्धों को तोड़कर तन-मन से भगवान की याद में संलग्न हो गये।

बचपन के कुछ हालात

बचपन में ही आप की जप-तप की बातें लोगों की जुबान पर आ गयी थीं। आप अब्दुल मुनईम शाह के मजार पर जाने और सारी रात खुदा के स्मरण और याद में लगे रहते थे। यदि किसी के लिए कुछ कह देते तो वही हो जाता था। इस भाँति सभी लोग आपके यश से प्रभावित थे और सभी आपकी इज्ज़त करते थे। आप खेल-कूद से घृणा करते थे। आपका खेल था रुपये-पैसे घर से लेकर बच्चों में बांटना और कभी-कभी लोकई हलुवाई से एक रुपये का बड़ा सा बताशा बनवाकर बच्चों को बांट देते थे। देखने में यह कथा एक साधारण सी बात है किन्तु यह बहुत सी असाधारण खूबियों से भरी है। प्रथम यह कि हुजूर एक दीन हलुवाई की पर्दे की ओट में पोषण करते थे। बच्चों पर निःस्वार्थ दया और सहानुभूति का अद्वितीय मिसाल है। बाल्यावस्था से ही आपको धन, सम्पत्ति, माल और असबाब से कोई लगाव नहीं था, बल्कि घृणा थी। आप भोलेपन से कहते थे कि न्याय की शर्त यही है कि सोने-चांदी के बराबर मिठाई खरीदी जाये। विशेष अवस्था में कहते थे माल और चाँदी-सोना फ़क़ीरों को नहीं चाहिए इसकी सत्यता इस प्रकार देखी गई कि दादी साहिबा की मृत्यु के पश्चात् चालिस दिन के भीतर ही आपने सारा धन और सम्पत्ति जो कुछ भी थी, सब दीन-दुखियों को दान कर दिया।

हज़रत वारिस पाक से सम्बन्धित भविष्यवाणियाँ

लखनऊ में एक सन्त या बुजुर्ग रहते थे जिनका नाम अकबर शाह साहब था। उनके यश से लोग प्रभावित थे। सदैव लोग उनके पास

एकत्रित रहते थे। लोग उनको उस समय का 'कुतुब' कहते थे। एक दिन की बात है कि हज़रत ख़ादिम अली र० वारिस पाक को लेकर अकबर शाह से मिलने गये शाह साहब ने आपको देखते ही गोदी में बड़ी प्रसन्नता से बिठा लिया और भविष्यताणी की "साहबजादे अपने समय में अद्वितीय होंगे।"

सज्जादा नशीनी

हज़रत ख़ादिम अली शाह की शिक्षा-दीक्षा में अभी वारिस पाक को थोड़ा समय व्यतीत हुआ था कि अचानक हज़रत ख़ादिम अली शाह की तबियत खराब हो गई और वृद्धापन के कारण और खराब होती गई। अंततः मृत्यु में परिवर्तित हो गई और एक दिन आपने उपस्थित चेलों और सेवकों को शान्ति तथा सन्तोष दिया तत्पश्चात् कलम-ए-शहादत उच्च स्वर में पढ़ा और कलमा पढ़ते-पढ़ते आपकी आत्मा ने इस नश्वर शरीर को त्याग दिया। पर्दा करने की तिथि 13 या 14 सफ़र बतायी जाती है। कफ़न-दफ़न के बाद तीसरे दिन फ़ातेहा ख्वानी की रस्म अदा की गई। इस अवसर पर तमाम छोटे-बड़े तथा सम्मानित व्यक्ति एकत्र थे। उसी सम्भा में जॉनशीनी (उत्तराधिकारी) के लिए बात चली। मौलवी मुन्ना जान जो आपके लंगरखाने के प्रबन्धक और व्यवस्थापक थे एक सुन्दर किरती (गोल से बर्तन) में एक पगड़ी रखकर सभी उपस्थितगण के सामने प्रस्तुत किया और कहा जिसको योग्य समझा जाये उसे यह पगड़ी सौंप दी जाये। चूँकि मुन्ना जान साहब को इस पद की चाह थी। अतः विवाद खड़ा हो गया। अंततः यह स्थान किसको दिया जाये और कौन इसके लायक है? इसी बीच सआदत अली जो हज़रत गौस ग्वालियारी के पोते हैं उठे और वारिस पाक का हाथ अपने हाथ में लेकर कहा कि मेरे विचार से इनसे उत्तम कोई नहीं है। तुरन्त ही लोगों ने एक स्वर में समर्थन किया और वह वरन्त्र सरकार वारिस के शरीर पर सुसज्जित किया गया।

खाने-पीने का तरीका

हुजूर वारिस पाक के भोजन की मात्रा थी एक तोला (दो भर या 11 ग्राम) प्रातः तथा एक तोला शाम। अंतिम उम्र में केवल एक तोला

भोजन की मात्रा चौबीस घंटे में थी जिससे विदित है कि आपकी रुहानी जिन्दगी थी, खाना-पीना नाममात्र को था। आपने वार्फ का पानी कभी प्रयोग नहीं किया है। आपने कभी मछली नहीं खाया और न खाने का कारण ही बताया है। जिस घर में आपका भोजन तैयार होता उसमें मछली नहीं पकती थी। यदि कभी भूल से ऐसा होता तो छप्पर में आग लग जाती थी। धनी हो या गरीब आप सबका निमन्त्रण स्वीकार न करते थे।

हाँ उन लोगों की दावतें अस्वीकार होती थीं, जिनकी रोजी जायज़ अथवा उचित ढंग से नहीं होती थी। ऐसे लोगों ने कभी आपके दावत के लिए साहस भी नहीं किया क्योंकि ये बात प्रसिद्ध थी।

भोजन करते समय आप सर को तहबन्द के कोने से ढाँक लेते थे। भोजन करते समय उकडू बैठते थे। खाने के पश्चात् इरित्तिंजा के लिए जाना व्यवहार में था। खाने के पश्चात् दिन में कीलोला ओर में अवश्य टहलते थे। खिलाल (खरिका) करना भी नियमतः था।

वस्त्र

बाल्यावस्था में आप बन्द वाली अचकन, गरारादार पैजामा, दो पल्ली कामदार टोपी तथा सलीम शाही जूता पहनते थे।

आप एहराम शरीर पर धारण करने के बाद उतारे हुए एहराम को सदैव के लिए त्याग देते थे और उतारे हुए एहराम का आधा लाने वाले को आधा भाग दूसरे हक वालों को मिल जाता था। जिसको प्राप्त करने की एक विशेष खुशी होती थी और उसका एक-एक धागा पवित्र सौगात के रूप में बंट जाता था।

ये लिवास जितना गौरवमयी और सम्मानित था उतना ही अपनी पवित्रता में भी श्रेष्ठ था। उसी प्रकार वारिस पाक की दृष्टि में महत्व भी रखता था। जिन सत्य खोजियों को आप एहराम प्रदान करते उन्हें इसके निमित्त वाह्य या आन्तरिक अदब की शिक्षा भी देते थे। जो अपने रूप में कठोर प्रयत्न थे, जिनके आप खुद पावन्द थे।

इससे यह विदित होता है कि अपने अरित्तत्व को मिटा देने की ओर संकेत है। आपके फकीर इसी एहराम में दफ़न किये जाते हैं। हुजूर

तारिस पाक ने लाल, काला और सफेद रंग का प्रयोग कभी नहीं किया। दोशाला, रेशम का तहवन्द आदि कभी हाथ से नहीं छुआ। आपका जो तरीका ओढ़ने, पहनने और खाने-पीने का था वह नियमित रूप ले लिया था और आजीवन भर उसमें कोई अन्तर नहीं आ सका।

तपस्या एवं योग साधना

आप बचपन से ही कठोर तपस्या में लगे थे, युवा होते ही आप तीन दिन का रोज़ा रखते थे, इन रोजों में आप अल्प आहार लेते थे, जो वार्त्तव में नहीं के बराबर होता था।

मौलवी रौनक अली साहब अपने खर्गीय दादा मौलवी कदीर अली की आँखों देखी बात लिखते हैं कि जब हुजूर पहली बार पैंतेपुर पधारे तो तीन दिन का रोज़ा रखते थे। तीसरे दिन उबाली हुई अरवी का आधा भाग बिना नमक का ग्रहण करते थे। अब्दुल ग़नी साहब वारसी रईस पुरवा जी एक वयोबृद्ध बुजुर्ग हैं, लिखते हैं कि जब आप देवा शरीफ और फतेहपुर कुछ दिनों के लिए रहते थे तो देखा गया है कि सातवें दिन आप रोज़ा केवल पांच उबले हुए आलू से खोलते थे। अन्य पुराने बुजुर्गों ने बताया है कि बहुत दिनों तक हुजूर को अन्न इत्यादि खाते हुए नहीं देखा गया। कुछ के मतानुसार पचास वर्ष की आयु तक और कुछ के अनुसार इससे भी अधिक उम्र तक नियमित रूप से रोज़ा रखते थे। आपका पेट रुमाल से कसा रहता था। कभी-कभी पेट पर पत्थर भी बंधा रहता था। बहुत दिनों तक आपने गोश्त, मछली, अंडा, लहसुन और प्याज़ का त्याग कर दिया था। चारपाई और चौकी पर कभी नहीं बैठते थे। सदैव भूमि पर बैठते और लेटते थे। रात अथवा दिन में कभी आप सोते हुए नहीं देखे गये। कभी आराम करते हुए किसी को यह शंका हुई कि आप निद्रा में हैं तो तुरन्त ही आपने कहा कि कौन है?

किसी को आपके तप-जप की खबर नहीं। आप पोशीदगी का इतना ध्यान रखते थे कि किसी को कुछ पता नहीं चलता था कि आप कब कौन सी साधना करते थे। आरम्भ में आप रात भर नफिलें अदा करते और कुरआन शरीफ की तिलावत (अध्ययन) करने की आदत थी। चालिस वर्ष

की उम्र तक रात में न आप आराम करते और न किसी से बात करते थे। सारी रात खड़े-खड़े नफिल नमाज पढ़ा करते थे।

तसलीम व रज़ा

'तसलीम' शब्द का अर्थ है कि ईश्वर की ओर से दुःख, भूख जो कुछ भी मिले सन्तोष सहित उसको स्वीकार करना और 'रज़ा' शब्द का अर्थ है कि प्रत्येक दुखों-सुखों और कष्ट आराम में प्रसन्न रहना तथा शिकायत का कोई शब्द जुवान पर न लाना हुजूर वारिस पाक की तपर्या में तसलीम व रज़ा का विशेष गौरव तथा महत्व झलकता है। आप सरापा तसलीम व रज़ा के प्रतीक थे। अन्य वरासतों की भाँति ये वरासत भी आपको अपने पूर्वजों से प्राप्त हुई। यह खास वरासत हज़रत इमाम हुसेन अलैहिस्सलाम का है। सरकार वारिस पाक स्वयं अपने मुखार विन्दु से वर्णन करते हैं 'तसलीम और रज़ा बीबी फातमा और दोनों साहबज़ादों का हिस्सा है।' यह भी कहा है कि इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम ने खुदा की एक रज़ा के लिए सारे परिवार को कर्बला के मैदान में शहीद करा दिया। कोई इस आशिकी के रहस्य को क्या समझ सकता है, यह बात बहुत ही नाजुक है।

एक साधारण तारीफ़ आपके तसलीम-रज़ा की यह है कि कोई भी व्यक्ति आपके पवित्र मुख से कभी भी कोई शिकायत नहीं सुना है। यहाँ तक की बीमारी में भी न रोग का नाम किसी ने सुना है और न दर्द अथवा कष्ट की बात, न सर्दी की शिकायत, न गर्भी की कमी-बेसी की बात ही जुवान पर आयी है। इससे यह सिद्ध होता है कि आपकी सम्पूर्ण इच्छायें खुदा की खुशी के लिए विलीन हो गयी थीं।

मौलवी नादिर हुसैन साहब लिखते हैं कि मैं आठ बजे हुजूर के पैर दबा रहा था। आपने कहा 'नादिर हुसैन इस समय हवा ठंडी चलती है।' मैंने उत्तर दिया 'जी हाँ!' पास ही बैठे तुराब अली शाह ने नम्रता से कहा 'दाता! दिन को ऐसी गर्भी पड़ती है कि सम्पूर्ण धान की फसल भरम हो गयी है।' यह सुनकर आपने कहा 'तुम क्या जानो माशूक का दिया हुआ कष्ट दुर्लभ होता है।' इसके बाद ही वर्षा हुई और बच्ची हुई फसल बहुत ही अच्छी हुई और रखी की फसल में भी खूब गल्ला पैदा हुआ।

हाजी अवधट शाह कहते हैं कि प्लेग के समय डाक्टर ने घर छोड़ने के लिए अधिक प्रयत्न किया किन्तु आपने घर नहीं छोड़ा। यहाँ तक कि अन्तिम बेला में भी जब आप रोग से पूर्णरूपेण ग्रस्त थे, वैद्य, हकीमों के हाल पूछने पर यही उत्तर देते थे कि बहुत अच्छा हूँ। यह सब बातें सिद्ध करती हैं कि आप पूरी तरह जीवन के हर पक्ष से रज़ा-तसलीम के पाबन्द थे। आप कहते थे कि जो तुमसे मोहब्बत करें, उससे तुम मोहब्बत करो, न किसी के लिए दुआ करो न बद्दुआ अर्थात् न आशीर्वाद दो न श्राप। तुम रज़ा-तसलीम के बन्दे रहो। आप रज़ा-तसलीम में इस क़दर ढूबे हुए थे कि न दुआ के लिए हाथ उठे न बद्दुआ के लिए क्योंकि अपने को ईश्वर के हवाले कर देना और जो विधि-विधान हो उसे बिना मीन-मेख के स्वीकार करना ही बन्दगी की शान है। तसलीम-रज़ा की व्याख्या आपने इस प्रकार की है 'तसलीम-रज़ा जब है कि बुराई को भी भलाई समझ ले। कष्ट, आशिक और माशूक का भेद है।' आप कहा करते थे कि माशूक का तरसाना, पर्दा करना और सख्ती करना ही उसकी दया और कृपा है। सारांश यह है कि आपकी नज़र में न कष्ट, कष्ट था और न सुख, सुख था। आप तंत्र-मंत्र, झाड़ फूंक को पसन्द नहीं करते थे और प्रत्येक को खुदा के हवाले कर देते थे।

संसार से विरक्ति बैराग

तसलीम व रज़ा की तरह संसार को छोड़ने में भी हुजूर वारिस पाक बहुत ही ऊँची शान और मर्यादा की अद्वितीय मिसाल हैं। हुजूर वारिस पाक ने संसार की प्रत्येक वस्तु का परित्याग जिस दशा में किया उसकी मिसाल भी बहुत कम मिलती है। आपने एक सुख-सम्पदा से भरे-पूरे घर में जन्म लिया तथा सम्पन्न भी थे। सोने चाँदी की कमी भी आपके पास नहीं थी किन्तु होश सम्हालते ही आपने सभी धन दौलत और अशर्फियों को कौड़ियों की तरह लुटा दिया। अपनी सारी सम्पत्ति और जायदाद, दीन-हीन में बांट दिया 'जो इस समय भी मौजूद है। एक खानदानी पुस्तकालय भी थ, जिसकी भी परवाह आपने नहीं किया। पूरा जीवन अविवाहित ही रहे। जब लोगों ने बहुत आग्रह किया तो आपने

कुरआन मजीद की आयत (श्लोक) वायान किया —

या अस्युहल्लज्जीना आमनू इन मिन अज़वाजेकुम व अवलादे कुम
अद्उल लकुम फ़ अहज़रोहुम

‘ऐ ईमान लाने वालों! तुम्हारी औरतें और तुम्हारी औलादें तुम्हारे
लिए शत्रु हैं। अतः तुम उनसे बचो अथवा परहेज़ करो।’

वारतविकास यह है कि आप माँ के पेट से ही बली जन्म लिये
थे। आपकी नज़र में खुदा का वह अनूप रूप बसा हुआ था जिसके
समुख नश्वर संसार का नाशवान रूप अति ही तुच्छ था। सरकार वारिस
पाक को केवल विवाह से ही घृणा नहीं थी, बल्कि वे जीवन सम्बन्धी सभी
सामग्रियों से घृणा करते थे। आपने कभी किसी वस्तु को पसन्द नहीं
किया। आपका देश में रहना ही सफर था और सभाओं में होना ही
एकान्तवास था।

शाह मकसूद अली शाह वारसी रहो एक मरत्त बुजुर्ग थे। जब
हुजूर की सेवा में उपस्थित होते तो अपनी उमंग और मरत्ती में कहा करते
थे कि हमारे पीर दस्तगीर का लगाव विशेषकर मसीही ढब पर है। जिस
तरह ईसा मसीह ने सांसारिक बन्धनों से विरक्त होने को मंजिल तय किया
है, वही यह वारसी मंजिल है। हुजूर मुरक्कुराते हुए कहते थे ‘फ़कीर का
कोई घर नहीं और सभी घर फ़कीर के हैं।’

हुजूर वारिस पाक की यह वाणी ऐसी सार्थक हुई कि भारत वर्ष में
सैकड़ों मकानात हुजूर के नाम से बने हैं। अधिक संख्या में बागान और
गाँव आपके नाम से मशहूर हैं जैसे-वारिस नगर, वारिस बाग, वारिस
मंजिल इत्यादि। अमीरों ने तो नया मकान बनाकर हुजूर के ठहरने के लिए
रख छोड़ा और गरीबों ने जब कभी नया मकान बनवाया तो अपनी शक्ति
के अनुसार एक कोठरी ही हुजूर के नाम से सुरक्षित कर दिया। बहुधा
स्त्रियों ने आपके इश्क व मुहब्बत में विवाह का परित्याग कर वस्त्र तथा
आभूषणों को त्याग दिया। सत्य की खोज में घोर कष्टों, असहा दुःखों को
झोलने की अभ्यरत हो गयीं, जिनमें बहुतों ने ईश्वर-भक्ति में ख्याति भी
पाई।

जब आप घरों में पदापण करते तो महिलायें चारों ओर से आपको
घेर लेतीं, आपके सिर में तेल लालतीं, पौव दवाने लगतीं, किन्तु कितनी
सबल और दृढ़ थीं, आपकी भगवान-विलीनता कि आपने कर्मी किरी की
ओर नजर उठाकर नहीं देखा, सत्य हैं —

काजल दूँ तो किर-किर करे, सुरमा दिया न जाय ।

जिन नयनन मा पिव बरे, दूजा कौन समाये ॥

परी भी हो तो नज़रों में भला क्यों कर समाती है ॥

(आसी रह० ३०)

आप महिलाओं को माता जी, बहन जी कहकर सम्बोधित करते थे
और वेधड़क वातें करते थे। परन्तु ये स्वाभाविक वातें ठीक अवोध वालकों
जैसी होती थीं। घर के लोगों का नाम ले-लेकर कुशल पूछते तथा सब पर
सहानुभूति दर्शाते थे। जो महिलायें दूसरे गुरुजनों से गुरुमुख होतीं, वह
भी आपके सम्मुख वेहिचक उपस्थित होतीं।

1873 ई० / 1793 हिजरी की बात है कि हुजूर पैतेपुर तशरीफ
लाये तो आपके आगमन का समाचार पाकर हकीम सलामत अली साहब
भी पैतेपुर के सम्मानित लोगों के साथ दर्शनार्थ हुजूर की सेवा में उपस्थित
हुए। आप उस समय मकान में थे, औरतों की भीड़ थी। दर्शनार्थियों के
पहुंचने पर पर्दा हो गया, औरतें हट गयीं। सभी लोग हाजिर हुए। हज़रत
वारिस अली पाक पर वज्द की हालत छाई हुई थी। पाठकगण 'वज्द' एक
ऐसा शब्द है जिसका अर्थ लिखने से बाहर है मेरे ख्याल में थोड़ा सा संकेत
काफी होगा। वह दशा जो अपनत्व (खुदी) को नष्ट कर देती है और जिस
पर ये अवस्था आती है वह ईश्वर की ज्योति के दर्शन में विलीन हो जाता
है। आपके नेत्र लालिमापूर्ण थे। आपका प्रकाश युक्त मुख तमतमा रहा
था। जब मिलने वाले लोग विदा होकर चले गये तो रास्ते में उन लोगों में
कुछ वातें होती जाती थीं। हकीम सलामत अली साहब आयुर्वेदिक
दृष्टिकोण से कहने लगे कि ब्रह्मचर्य की शवित विचित्र होती है। औरतों
की संगत और पाक दामनी की सहनशवित यही कारण है कि हुजूर के नेत्र
और पवित्र मुख लालिमा से भर उठा था। रास्ते में हाजी हाजी मनसब

अली शाह रहो अलौ पढ़ते थे सभी लोग उनके दर्शनार्थ उपरिथित हुए। सलामत अली हकीम साहब को देखते उक्त शाह साहब कोधित हो उठे। कहने लगे हकीम साहब फ़कीरों के मामले में हिक्मत की क्या पहुँच है जब आपका यही हाल है तो अक्ल को ठीक कर लीजिये मेरे पास न आइये।

हकीम साहब ये सुनकर खिसके। रास्ते में अपने साथियों से कहने लगे फ़कीरों का विचित्र मामला है। एक फ़कीर की बात का ज्ञान दूसरे फ़कीर को कैसे हो जाता है। फिर वह डर गये और इतने प्रभावित हुए कि हमेशा वह फ़कीरों का अदब करते रहे। कहने का तात्पर्य यह है कि सरकार वारिस पाक की प्रत्येक बातें ही विचित्र और निराली थीं। एक बार हुजूर ने विशेष मुद्रा में कहा फ़कीरी खुटका पर है। सुनने वालों को अचम्भा हुआ, बात कुछ समझ में न आई। हुजूर ने ख्याली व्याख्या करते हुए कहा शक्ति होते हुए भगवान के लिए एक विशेष अंग बेकार कर दो और उससे काम न लो, शैतान को बगल में रखकर खुदा को याद करना बड़ा काम है, अपनी आत्मा द्वारा राह चलना बहुत कठिन काम है। आपने किसी अवसर पर लंगोट बन्द की यह तारीफ़ की है, लंगोट बन्द वह है जो सभी स्त्रियों को अपनी माता तथा बहन समझे और देखे। इसी भाँति किसी स्त्री को स्वप्न में वासना के निमित्त न देखे।

तवक्कल - स्तग़ना

तवक्कल का अर्थ है अल्लाह पर भरोसा करना और उसके अतिरिक्त सबसे बेपरवाह होना। स्तग़ना का अर्थ होता है कि भगवान के सिवा किसी की परवाह न करना। हुजूर वारिस पाक आरम्भ से ही बड़े खतंत्र विचार के थे और बड़ी धनी तवियत के थे। वास्तव में किसी वरतु से गरज़ नहीं थी। आप नज़राना नहीं पसन्द करते थे। रूपया, पैसा, दिरहम, दिनार नहीं लेते थे। सौगात स्वीकार करते थे और वह भी उसीं समय निछावर करके गरीबों को स्वयं बांट देते थे। विशेष महत्व की बात यह है कि आपने किसी प्रकार का रूपया पैसा कभी अपने पुनीत हाथ से छुआ

तक नहीं, न अपने पास रखा। आपने कभी खाने-पीने का कोई प्रबन्ध नहीं किया, घर-द्वार, बिरत्तर, कम्बल, ओढ़ना, विछौना कुछ भी अपने पास नहीं रखा। जरूरत की चीजों से भी बेफिक्र रहते थे। किसी को विस्तार उठाकर दे दिया, किसी को कम्बल, किसी को चादर बाँट दिया करते थे। हकीकत यह थी जरूरी सामानों की भी कोई चिन्ता नहीं रखते थे। केवल एक ऐहराम (पीला वस्त्र) आपके पवित्र शरीर पर होता था, वह भी किसी दूसरे व्यक्ति का दिया होता था जो लोग बदलवाने के लिए लाते थे। जब कोई ऐहराम आपको लाता था। आप उसे शरीर पर डालते और उतारा हुआ उसी समय किसी को दे दिया जाता था, चाहे वह कितना ही बहुमूल्य हो। आप उसे सदैव के लिए छोड़ देते थे। धनी-मानी, राजा-महाराजा मूल्यवान चादरें, जामादारें तथा अन्य अमूल्य वस्तुएँ उपहार में भेजते किन्तु आप अपने लिए किसी को पसन्द नहीं करते थे। हाँ, बांटने से बहुत खुश रहते थे। अतः आपकी प्रसन्नता हेतु धनी-मानी लोग उपहार लाते और दीन-दुखियों में बांटकर आनन्दित होते थे। चारों ओर यह बात फैली हुई थी जो जिस इरादे से अथवा जिस ख्याल से जाता था, आपके दानशील दरबार से उसको वही प्रदान होता था। शेख निहालुद्दीन साहब, निवारी कुरसी, जिला-बाराबंकी के हैं, बयान करते हैं कि एक समय की बात है कि मैं सरकार वारिस पाक के दरबार में हाजिर था, वहीं पर एक रईस साहब हुजूर की सेवा में एक फर्द (चादर) तैयार कराके लाये। उनके साथ उनका खानसामा भी था जिसकी नीयत फर्द पर लगी थी। रईस साहब ने आपके चरणों में वह फर्द अर्पित कर दी। हुजूर बहुत आनन्दित और खुश हुए। उसी समय फर्द ओढ़कर बैठ गये। दो-चार मिनट बाद वह रईस चरण स्पर्श कर चले गये। तत्पश्चात् ही उनका खानसामा अपने हाथ की बनाई हुई मिठाई लाकर हुजूर के सन्मुख पेश किया। आपने उसका उपहार स्वीकार कर बंटवा दिया और खानसामा को अमीर की चादर जो ओढ़े हुए थे प्रदान कर दिया। इस प्रकार की घटनायें बहुधा होती रहती थीं किन्तु कोई सवाली कभी खाली हाथ नहीं लौटता। आपके सेवक उसको इतना देते कि उसकी जरूरत से अधिक हो जाता था।

हुजूर स्वयं आज़ाद मिज़ाज़ और संसार से विरक्त थे। उनकी विशेषता की एक अलग शान है किन्तु अपने गुलामों को भी यही हिदायत

थी और हिदायत ही तक नहीं बल्कि उनकी कड़ी पकड़ होती थी। गुलाब शाह साहब आपके फ़कीरों में थे। आगरा में रहते थे। हाफिज गुलाब शाह वारसी पानी फूंककर दे देते थे। पानी पीने वाला निरोग हो जाता था। आपके यहाँ जवान-बूढ़ों और बच्चों की भीड़ लगी रहती थी। दरवाजे पर रोगियों-दुखियों का तांता बना रहता था। आठ दस भिस्ती पानी लिए खड़े रहते थे तथा कुम्हार टोकरों में मिट्टी के कूज़े (बट्टे) लिए बेचते रहते थे। संयोगवश कलक्टर साहब बहादुर की पत्नी को प्रसव पीड़ा आरम्भ हुई दो चार दिन इसी कष्ट और परेशानी में बीत गये। डाक्टर भी परेशान हो गये। लोगों ने जिलाधीश महोदय से कहा यहाँ एक फकीर रहते हैं, वह प्रत्येक रोग के लिए पानी फूंककर देते हैं। कलक्टर महोदय ने पानी मंगाकर प्रयोग कराया। बच्चा पैदा हुआ। कलक्टर महोदय बड़े अधिकारियों से प्रयत्न करके पांच हजार वार्षिक आमदनी के एक मौजे की सनद बनवाकर तहसीलदार साहब द्वारा भेजवाया। हाफिज गुलाब शाह लेने में सोचने लगे और इस मामले से सम्बन्धित एक प्रार्थना पत्र सरकार वारिस पाक की सेवा में भेजा कि जो आपकी आज्ञा हो किया जाय। आपने गुलाब शाह को आदेश किया कि गुलाब शाह खुद ही इनकार कर देना जरूरी था, जो खुदा सम्पूर्ण रोगों को दूर कर सकता है। वह भूख-प्यास का कष्ट भी निवारण कर सकता है। जो लालच में घिर जाये वह हमारा नहीं है। गुलाब शाह ने सनद लेने से इनकार कर दिया। कलक्टर साहब उदास हो उठे और कुछ सोच समझकर हाफिज साहब के मकान से लगी हुई एक मस्जिद का निर्माण करा दिया। एक बार आपने कहा 'बड़ी फ़कीरी यह है कि हाथ न फैलाये किसी के आगे।' हाजी अवघट शाह ने पूछा कि यदि कोई बिना मांगे दे तो क्या करें? तो आपने कहा 'यदि बिना मांगे दे तो ले लो।' इस आदेश से यह विदित है कि नज़राना, भेंट इत्यादि जो बुजुर्गों के यहाँ चलता है जायज़ और उचित है। किन्तु इसको भी आपने लिए उचित नहीं मानते थे। आपकी दृष्टि का मूल किसी के आगे हाथ न फैलाना था। आपका कहना है 'आजकल तौहीद (अद्वैत) टके सेर है। भीख मांगते हैं, बड़ी चीज यह है कि मर जाए किसी के आगे हाथ न पसार। तौहीद (ईश्वर को एक मानना और एक जानना) की प्रतिष्ठा आजकल नहीं है।'

हुजूर की नज़र सांसारिक वैभव से परे रही और हमेशा इसके पाबन्द रहे। कभी भी जुबान से खाना-पीना और इससे सम्बन्धित वस्तुओं को कभी नहीं मांगा और न इच्छा व्यक्त की। आपके सेवक दैनिक अनिवार्य वस्तुओं को समयानुसार हुजूर के सम्मुख पेश कर देते तो आप खीकार कर लेते थे। एक बार आपके कुछ सेवकों ने आप पर निछावर किया हुआ कुछ रूपया एकत्रित किया था। इस पर आपने बहुत डँटा और रोका। लोगों ने उज्ज किया और बहाना बनाया तो आप यह दोहा गुनगुनाने लगे :

गुरु से कपट मित्र से चोरी ।

कि होइहें निर्धन कि होइहें कोढ़ी ॥

आप दो वस्तुओं को अपने पास रखते थे। मिट्टी के ढेले पवित्रता (तहारत) के लिए और खरिका दाँत साफ करने के लिए। जब कभी गर्मी के दिनों में आपके सोने के लिए बिछौना बाहर लोग लगा देते थे और रात में वर्षा आ जाती तो आप केवल मिट्टी के ढेले (क्लूख) और खरिका लेकर अन्दर चले जाते थे। कहा जा सकता है कि हुजूर की दृष्टि में जीवनयापन करने के लिए दो ही वस्तुयें अनिवार्य थीं। 'व अलल्लाहे फ़्लयतावक्कलिल् मूमेनून' अर्थात् ईमान वालों को चाहिये कि केवल ईश्वर पर भरोसा करें तथा निर्भर रहें।

नियमित जीवन-यापन

नियमित जीवन व्यतीत करने की शैली जो आपमें देखी गयी है वह कहीं किसी में न देखी गयी है और न सुनी गई है। जिससे जाहिर है कि आपके मिजाज में उच्चतम श्रेष्ठता और मजबूती और एक रंगी थी। जो बात आरम्भ में आपसे प्रकट हुई वह वजा में सम्मिलित हो गई और उसमें परिवर्तन होना किसी भी दशा में असम्भव था।

जिस आदमी के मकान पर आप एक बार रुके और ठहरे आजीवन आपने अपने पदार्पण से उसी मकान को सम्मानित किया। बड़े-बड़े धनी-मानी व्यक्ति प्रार्थना करके हार गये परन्तु आप प्रथम गरीब मेजबान का दिल तोड़ना पसन्द नहीं किया। जीवन के अन्तिम भाग में जब आप बहुत कमज़ोर और ज़ईफ़ हो गये थे सफर नहीं करते थे। आपके धनी मालदार मुरीद (धार्मिक चेले) खुद जाकर आपको लाते थे। तो भी आप

उनके घर नहीं ठहरते वरन् उस शहर में जहाँ प्रथम बार रुके थे उसी स्थान पर रुकते थे। यहाँ तक कि किसी शहर या कस्ता में पहली बार जिस रास्ते प्रवेश किये थे उसी रास्ते से तशरीफ ले जाते थे और कभी उस रास्ते को नहीं बदलते थे। यदि कभी अपनी लीनता विलीनता के कारण संयोगवश रास्ता छूट जाता तो आप लौटकर उसे रास्ते पर पलट आते थे और कहते थे कि हमारा पुराना रास्ता यही है गोया रास्ते से भी रनेह हो जाता था।

मौलवी रौनक अली साहब वारसी लिखते हैं कि ग्राम-गौरा, जिला-बाराबंकी जब प्रारम्भ में सरकार तशरीफ ले गये थे तो राह में एक बाग था जिसके एक वृक्ष के साथ में आप थोड़ी देर आराम किये थे।

दूसरी बार पन्द्रह-सोलह वर्ष पश्चात् उसी रास्ते से उसी गाँव को जा रहे थे। पालकी में सवार थे क्योंकि उस समय आपका बुढ़ापा था और अत्यधिक कमजोर हो गये थे। जब आप बाग पर पहुँचे तो पालकी रोकवाकर उत्तर गये समय के फेर ने उस बाग को उजाड़ दिया था। आप उस बाग के उसी वृक्ष के स्थान पर गये और थोड़ी देर विश्राम करने के बाद फिर पालकी पर सवार हुए। अपने साथ वालों से कहा जब हम पहली बार इस रास्ते से गुजरे थे तो इस स्थान पर एक छायादार वृक्ष था। यह विशेषता आप में सदैव पाई गई कि आप जिस मकान अथवा स्थान पर प्रथम बार जिस ओर मुँह करके बैठे, उठे और आराम किया हमेशा आप उसी प्रकार व्यवहार करते रहे कभी आचरण में अन्तर नहीं आ पाया।

बैठक व विश्राम

'बैठना और आराम करना' हुजूर वारिस पाक के उठने-बैठने और आराम करने में भी नियम की पाबन्दी पायी जाती थी जो आपके पूरे जीवन में दृष्टिगोचर हुई। आपकी आदत थी भोजन करने के पश्चात् दो तीन सेकेण्ड बाईं करवट आराम करते तत्पश्चात् करवट बदल लेते थे। आपको कभी चित्त या उतान लेटते नहीं देखा गया है। जब आपको करवट बदलना होता था तो आप बैठकर दाईं ओर फिर लेटते थे। एक ही करवट लेटने के कारण आपके दायें कूल्हे पर घाव पड़ गया था। आप तकिया का प्रयोग कभी नहीं करते थे। सोते समय अपने दाये हाथ को सिर के नीचे रख लेते थे। एक बार मौलवी अहमद हुसैन साहब ने आपके विछौने पर दो

तकिये रख दिये तो आपने कहा 'हम तकिया परान्द नहीं करते।' जीवन के अन्तिम भाग में दुर्बलता के कारण अधिक कष्ट होता। सेवकगण देखते तो सहारे के लिए कोई कपड़ा सिरहाने रख देते थे। आप भोजन करते समय उकडू बैठते थे और इसी ढंग से बैठने की आदत थी। उकडू बैठने में आप दोनों हाथ जमीन पर रख लेते थे। कभी दो जानू और कभी एक जानू भी बैठते थे अर्थात् कभी दोनों पाँव मोड़कर और कभी एक पाँव मोड़कर बैठते थे। आपकी बैठक का एक ऐसा अंदाज़ था कि आपके बैठक पर अल्लाह शब्द साफ पढ़ा जाता था। कहा जा सकता है कि आपकी बैठक भी भगवान के स्मरण या यादे ईलाही से खाली नहीं थी। आराम करने अथवा लेटने की दशा से शब्द मुहम्मद की सूरत दिखाई देती थी। टांग पर टांग रखकर आप कभी नहीं बैठते थे या पलथी लगाकर नहीं बैठते थे।

सरापाये मुबारक

सरापा का अर्थ होता है सिर से पैर तक माशूक की बड़ाई बयान करने को सरापा कहते हैं। हुजूर वारिस पाक का हुरन और उनकी खूबसूरती बेजोड़ थी। आपकी शारीरिक बनावट की सराहना कठिन है तथा शब्द व सूरत ईश्वर प्रदत्त थी। आपके दर्शनकर्ता ईश्वर के प्रकाश निरीक्षण में लग जाता था। खुदा के इस कथन के आप हक़दार थे : 'लकद ख़लक़ नल इन्साना फी अहसने तक़वीम' अर्थात् हमने मनुष्य को अति उत्तम बनावट पर पैदा किया। आपका सम्पूर्ण शरीर मानों प्रकाश के साँचे में ढला था। आपकी मुखाकृति गेहुयें रंग की लालिमायुक्त आकर्षक तथा मनोहर थी। आपके चेहरे का रंग बदलता रहता था। कभी सुख, कभी उज्ज्वल और कभी चन्द्रमा की भाँति दमकता हुआ। जिससे नजर भर के देखना कठिन हो जाता था। हुजूर वारिस पाक प्रातः बिना मुंह धोये चादर से मुंह नहीं करते थे। एक बाद इस दशा में सैय्यद मारुफ शाह साहब को आपके मुख का दर्शन हुआ था। उक्त सैय्यद साहब का कहना है कि आपके मुख की लालिमा सूर्य के समान थी। देखते ही आंखों में चकाचौंध उत्पन्न हो जाती थी। हाजी अवघट शाह वारसी का कहना है कि हकीम अहमद साहब बछरायूनी को भी एक बार यह शुभ अवसर प्राप्त हुआ था। आप उस ओजस्वी मुख को देखकर सूर्य की लालिमा के चक्कर में पड़ गये थे।

बातचीत करने की शैली

आपके बेमिसाल सरापा के भाँति ही आपके बात करने का ढंग भी निराला था। आपके कथन में मनमोहकता और मिठास भरी होती थी। एक बार आपकी बातें सुनकर बहुत दिनों तक हृदय चटखारा लेता रहता था। चुप-चाप रहने की आदत थी। सदैव दृष्टि नीची होती थी। आपके बाक्य छोटे होते थे। बातें धीरे-धीरे और जल्दी होती थीं। शब्दों को दोहराने की आदत थी आपकी जुबान में कुछ कम्पन थी। आपके बातें अबोध बालकों जैसी सीधी-सीधी होती थीं। बाक्य अत्यन्त संक्षिप्त होते थे। जो चाहने वालों को व्याकुल कर देते थे। आप बातों-बातों में कठिन से कठिन गुत्थियाँ सुलझा देते थे। आपके मीठे और मधुर वचन दुखी दिलों का दुःख दूर कर देते थे। आपके खामोश रहने में भी एक प्रत्यक्ष शान दिखाई देती थी। लोग इच्छुक रहते थे कि आप कुछ कहें और लोग लाभान्वित होंवे। प्रत्येक दिल की दशा आप जानते रहते थे। जब आवश्यकता होती या समझते तब बोलते थे। कभी ठहाका मारकर नहीं हंसते। यह जरूर था कि मुस्कुराते हुए जान पड़ते थे। किसी से बात को हुजूर लम्बा करना नहीं चाहते, जहाँ तक होता बातें जल्द ही समाप्त कर देते थे। आप अधिकांश चुप रहा करते थे। आपके बात करने की अनोखी शान थी। जिससे आप बात करते वह रोमान्चित हो उठता, अपना होश खो देता था तथा मुहब्बत में मरत हो जाता था।

आपकी जीवनी लिखने वालों ने भी दो चार बातों के अतिरिक्त कुछ भी नहीं लिख पाये हैं, क्योंकि सरकार वारिस पाक के जीवन का अधिकांश भाग भ्रमण और यात्रा में व्यतीत हुआ। किन्तु जो कुछ भी लिखा गया है वह या तो आँखों देखा है या पुराने बुजुर्गों की कही हुई बातें हैं। कभी भी सरकार ने अपने चाहने वालों को सफर की बातें बतायी नहीं हैं और यदि कभी कुछ समयानुसार कहा भी है तो बहुत ही कम शब्दों में। मौलवी रौनक अली साहब वारसी रज्जाकी पैंतेपुरी जिनको दरबार वारसी में गौरव प्राप्त है। लिखते हैं कि मैंने अपने पिता की डायरी में देखा है कि दूसरे आदरणीय बुजुर्ग से सुना है कि सरकार वारिस पाक ने सत्तरह हज किंय हैं और लगातार बारह वर्ष की यात्रा में अरब, ईरान, हज्जाज, ईराक, मिस्र और शाम देशों में भ्रमण करते रहे। इसमें दस बार हज किये हैं। वहाँ

की वापसी के बाद सात बार भारत से हज करने गये हैं। जिसमें तीन रथल मार्गों से कालुल होकर और दो बार इंजन से चलने वाले तथा दो बार पाल वाले जहाज से। ये यात्रायें भिन्न-भिन्न स्थानों, कभी अजमेर, कभी मुलतान से एक हज देवा शरीफ से प्रस्थान किये।

अन्य धर्मों के लोगों का झुकाव और शिष्य होना

वर्तमान काल जो ज्ञान शैली के अनुसार पाश्चात्य सभ्यता का युग कहा जाता है, जिसके अनुसार निरीक्षण के अतिरिक्त अन्य बातों को व्यर्थ समझा जाता है। ईश्वर ने ऐसे युग के लिए पूज्य हाजी वारिस पाक को सम्पूर्ण विश्वास और यकीन बनाकर इस धरती पर भेजा और जन सैलाब आपकी आत्म शक्ति और आत्म-ज्ञान से प्रभावित हुआ। सम्पूर्ण धर्मों और मतों के लोग आप पर मंत्रमुग्ध और आसक्त थे। हजारों हिन्दू धर्मावलम्बियों ने आपके नाम को साधन बनाकर विनय करते और भिन्नतें मानते थे। सरकार वारिस पाक ने अपने आचरण व्यवहार तथा आन्तरिक शक्ति के प्रभाव से जनमानस के बीच आपसी प्रेम भाईचारा लोगों को ईश्वर की तरफ झुकने का मार्ग प्रशस्त किया। हजारों लाखों हिन्दू धर्म अनुयायी आपके शिष्य हो गये सरकार वारिस पाक ने उर्स (फकीरों का जन्म दिन) की तिथियाँ भी सूर्य तिथि के अनुसार निश्चित किया तथा चन्द्र तिथि का हिसाब छोड़ दिया कार्तिक मास की करवा चौथ को देवा शरीफ का बड़ा मेला प्रारम्भ होता है। जिसमें विश्व के सभी धर्मावलम्बी या-वारिस-या-वारिस कहते हुए शामिल होते हैं। ईश्वरीय वस्त्र (एहराम) की उत्सव यात्रा प्रारम्भ होती है। लोग अपनी मनौती पूरा होने पर एक परात में एहराम को रखकर अपने सिर पर रखते हैं और गाजे-बाजे के साथ सरकार वारिस पाक के सामने हाजिर होते हैं। उस समय की उमंग श्रद्धा, सत्य प्रेम और एकत्व तथा हार्दिक एकता अकथनीय है।

सरकार वारिस पाक के प्रमुख हिन्दू भक्त

ठाकुर पंचम सिंह ईस मलावली जिला मैनपुरी पूज्य वारिस पाक के प्रमुख भक्तों में हैं। उन्होंने कठिन तपस्या किया है और अध्यात्म ज्ञान से मरत रहे हैं। आप जप-तप में लीन रहते थे। हुजूर के समुख-संसार का

कोई भी वैभव उनकी दृष्टि में तुच्छ था उन्होंने अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति सरकार के चरणों में अप्रित कर दी।

आज भी आपका लंगर आस्ताने में आने वाले जायरीनों को सेवा पहुँचा रहा है। इसी प्रकार से हुजूर के अन्य प्रमुख भक्तों में बाबू काशी प्रसाद, निवासी इलाहाबाद, पण्डित तिलक नारायण मुजफ्फरपुर, राजा सुरुपजीत सिंह सूरतगंज अवध, ठाकुर विशुन सिंह रायपुर, पण्डित श्यामलाल, बाबू कन्हैयालाल वकील अधिकांश हिन्दू सन्तों ने शिष्य होने के पश्चात् संसार विरक्त होकर तपस्या में लीन हो गये जैसे ब्रह्माशाह, मिरआत शाह, दिनदार शाह आदि राजपूत कंचन सिंह को सरकार वारिस पाक ने जगन्नाथ भगवान के दर्शन अपने रूप में कराकर अपना भक्त बना लिया।

ब्रह्मीभूत होना

दीदार मी नुमाई व परहेज़ मी कुनी।
बाज़ार खेश व आतिशे मा तेज मी कुनी॥

लोगों अथवा हमारी दृष्टि से बच रहे हो या छुप रहे हो फिर दर्शन भी दे रहे हो, मानों अपनी बाजार गर्म और हमारी विरह-अग्नि को ज्वलित कर रहे हो। सारांश यह है कि औलिया ईश्वर की मृत्यु नहीं है किन्तु यह लौकिक रूप में प्रत्यक्ष दृष्टि से शरीर त्याग देते हैं। हमारे पूज्य दाता वारिस पाक को भी शरीर त्याग करना पड़ा। जिस भौतिकता की दशा का वर्णन इस प्रकार है। यह वियोगदर्शी व श्रोतागणों हेतु यह घटना प्राण विदारक रूप रही है। 14 मोहर्रम 1324 हिजरी मुताबिक 1905 ई० को साधारण रूप में आपको जुकाम हुआ। शनैः-शनैः 20 मोहर्रम तक आपकी तबीयत बहुत खराब हो गई। ज्वर प्रकोप तीव्र हो गया। साधारणतः लोगों की व्याकुलता बढ़ गयी। वैद्य और हकीम बुलाये जाने लगे किन्तु सरकार के मुख से कोई शिकायत नहीं सुनी गई। न आपकी दशा से कष्ट इत्यादि का कोई लक्षण ही प्रकट हुआ। उस समय भी आप द्वारा यश दान पूर्ववत हो रहा था। प्रत्येक सवाली अपनी झोली भर रहा था।

सरकार वारिस की तबीयत को देखते हुए उस समय के जाने माने

हकीम अब्दुल अजीज साहब रहमतुल्लाह को बुलाया गया। उनके कथन के अनुसार मैंने इतनी अधिक उम्र में किसी की भी इतनी वलिएट नाड़ी नहीं देखी। इन बुजुर्गों की हृदय शवित्र ऐसी होती है कि साधारण वैद्य नाड़ी पहचान नहीं कर पाते हैं। पूज्य दाता वारिस पाक ने पूरी भाँति से संसार त्याग देखा था और वह प्रबल शवित्र के स्वामी थे जिसका निरीक्षण मेरे सम्मुख उपस्थित था। हकीम मुहम्मद अहमद साहब निवारी कुरसी जिला बाराबंकी बयान करते हैं कि हकीम अब्दुल अजीज साहब लखनऊ ने मुझसे बताया कि वेसाल के समय भी सरकार की नाड़ी गति शुद्ध थी उसमें कोई अन्तर नहीं था। हमने अपने जीवन में इतनी मजबूत नाड़ी नहीं देखी है।

मैंने सरकार की कदमबोरी किया उस समय ज्वर का तापमान लगभग 99 डिग्री तक था। निर्बलता अति अधिक हो चुकी थी। पर इन सबके होते हुए भी कोई शिकायत अथवा किसी प्रकार का रोग प्रभाव आपके मुख से प्रकट नहीं होता था। आपकी सेवा में सुल्तान महमूद इटावी इत्यादि अमीर-गरीब, धनी-कंगाल सभी वर्गों के लोग आपकी सेवा हेतु आपके निकट एकत्र थे। धनवानों ने जी खोलकर धन और रूपया खर्च किया। दान दक्षिणा बहुतायत से बांटा गया है। खैरात, जकात में कोई कमी नहीं होती थी। आपका रोग बढ़ता ही रहा। बलगम शुष्क बन्द था परन्तु आपके मुख से किसी प्रकार के कष्ट सूचक शब्द नहीं निकले थे। उठने बैठने में कोई अन्तर नहीं था। वहीं बैठक और वहीं सीधा करवट लेटकर विश्राम करना पूर्ववत् था।

इसी रोगावस्था में एक दिन उन्होंने उपस्थित वारसी जनों को सम्बोधित कर कहा यह संसार स्वप्न मात्र है। एक न एक दिन अवश्य ही सभी को नजरों से गायब होना पड़ता है। जिस जगह या जिस रथान पर हम सो जायें वहीं हमको भूमि में उतार देना चाहिए। आशिक जिस वस्त्र में होता है उसी में दफन कर देना अनिवार्य है। सैय्यद मारुफ शाह कहते हैं कि एक बार पूर्व वीमार होने के पूर्व भी आपने यह कहा था। यह आपकी अंतिम वियोग वाणी थी। जिनसे प्रेमियों की चेतना शून्य हो गयी।

सभी लोग अश्रुपूरित नेत्रों से एक दूसर को देखने लगे। श्रीमान यास टॉकी का एक पद है—

कियामत था यह कहकर उनका पहलू से निकल जाना।

खुदा हाफिज़ है, अब मेरे तसव्वर से बहल जाना॥

हज़रत फ़ज़ीहत शाह का कथन है कि 30 मोहर्रम 1323 हिजरी 1905 ईसवी के दिन सरकार वारिस पाक ने शहादत की अंगुली उठाई और कहा “अल्लाह एक है।” फिर कुछ रात गई थी हकीम मुहम्मद याकूब से पूछा क्या वक्त है?” हकीम साहब ने कहा दस बजे हैं। आपने कहा कि हम चार बजे अपने परम् मित्र के पास जायेंगे।

हाजी फैजू शाह साहब ठंडे पानी में मधु मिलाकर बार-बार देते थे। उस समय आपका जिक्र इलाही चल रहा था। बलगम की शुष्कता के कारण जप स्वर सुनाई पड़ रहा था। उसी दशा में प्रातः 4 बजकर 13 मिनट पर ब्रह्म बेला में ईश्वरीय गति को प्राप्त हुई। प्रथम सफर सन् 1323 हिजरी सन् 1905 को आप शरीर त्यागकर हमारी लौकिक दृष्टि से अन्तर्ध्यान हो गये। इस दिन जुमा का पुनीत दिन शुक्रवार था, जब आप श्रेष्ठता के आवरण में समा गये और इस संसार की भौतिक बन्धनों को तोड़कर परमात्मा में विलीन हो गये अर्थात् आत्मा परमात्मा में समा गई।

आलम पनाह वारिस पाक की वसीयत

सरकार आलम पनाह हज़रत हाजी फैजू शाह से फरमाते रहते थे कि फैजू हमारी मन्ज़िल इश्क है जो हम से मुहब्बत करे वही हमारा है। एक दिन आलम पनाह ने फैजू शाह से कहा सुनो फैजू मैं अपना एक इकरारनामा हकीम शेर मोहम्मद खाँ से लिखवाकर तुम्हें देता हूँ और जब कोई बड़ा हाकिम तुमसे मांगे तो उसको ज़रूर दिखा देना।

नक़ल इक़रार-नामा

मन्कि सैय्यद वारिस अली शाह वल्द कुरबान अली शाह साकिन देवाँ परगना व तहसील नवावगंज, बाराबंकी।

चूँकि हमने तुम लोगों को मोहतमिम मिर्ज़ा मुस्तकीम शाह का मुकर्रर किया क्योंकि हमने मुस्तकीम शाह से इकरार किया था कि हमारा तुम्हारा साथ दीन व दुनिया में है जो कोई देवे वाला और कोई कुछ कहे

तो वह बातिल है और हमारे यहाँ मन्जिल इश्क की है जो कोई दावा जानशीनी का करे वह भी बातिल है। हमारे यहाँ जो कोई हो चमार हो या खाकरोव हो हम से मुहब्बत करे वही हमारा है।

अलमरकूम 7 नवम्बर 1889 ई०

अलअब्द	गवाह शुद	गवाह शुद
वारिस अली शाह	तुराब अली ज़मीनदार	नूर मोहम्मद शाह
बकलम हकीम शेर मो ० खाँ	साकिन भिठीली	खादिम, राक़िम हाज़ा वख्शिश अली ज़मीनदार (गदिया)

इश्क से सम्बन्धित वचन

1. “इश्क ईश प्रदत्त है जो उपार्जन से अर्जित नहीं होता।”
(इश्क ईश्वरीय देन है। प्रयत्न और श्रम से नहीं मिलता।)
2. “मोहब्बत में अदब वेअदबी का फर्क नहीं।”
(प्रेम में विशिष्टता और अशिष्टता का कोई भेद नहीं है।)
3. “मोहब्बत वह चीज है जिसको कोई हानि नहीं पहुँचा सकता।”
4. “मोहब्बत है तो हम हजार कोस पर तुम्हारे साथ हैं”
5. “फ़कीर कम मशायक ज्यादा होते हैं चूँकि इश्क की मंज़िल सख्त दुश्वर गुजर है, इसलिए चाहने वाले इस रास्ते को कम पसन्द करते हैं।”
(प्रेम मार्ग कठिन और कड़ा है अतः कम ही लोग पसन्द करते हैं।)
6. “मोहब्बत है तो सब कुछ है। मोहब्बत नहीं तो कुछ नहीं।”
7. “जो कुछ है लगाव है बाकी झगड़ा दिखलाने की चीज़ है। अगर लगाव नहीं तो खाक नहीं दुनियादारी-दुकानदारी है।”

तसदीक़

1. तसदीक हजारों में से एक को होती है हर एक का हिस्सा नहीं। फिर इसकी भी कई सूरतें हैं। जबानी जमा खर्च से काम नहीं चलता।
2. जिसको यहाँ तसदीक नहीं वह काबा जाकर क्या करेगा? वहाँ जाकर सिवाय पत्थर के क्या देखेगा। खुदा हर जगह है तो काबा तो सिर्फ जेहत (तरफ, सिम्मत, दिशा) है।
3. सोहबत (संगति) से कुछ हासिल नहीं जब तक मन उसकी पुष्टि

न करे।

4. किताब पढ़ने से कुछ हासिल नहीं है। तसदीक और चीज है।

यकीन

यकीन से सम्बन्धित वारिस पाक के कुछ कथन निम्नांकित हैं—

1. यकीन विश्वास का प्राण है। जिसमें यकीन की कमी है उसमें सदाकद (विश्वास) की भी कमी है।

2. जिनकी दृष्टि दोस्त पर है उसका कोई दुश्मन नहीं है।

3. खुदा पर भरोसा करो वह स्वयं तुम्हारा प्रबन्धक है। यदि कोई अपना उपाय करता है तो वह अलग खड़ा होकर तमाशा देखता है और फिर कुछ नहीं होता।

4. हजार कोस से पति अपनी पत्नी की फिक्र रखता है (हृदय की ओर संकेत करते हुए) और जो तुम्हारे भीतर है वह नहीं फिक्र करेगा।

5. जिसके मन में ये हो कि देखिए यह काम हो कि न हो वह कार्य नहीं होता क्योंकि दुविधा में पड़ा है। बल्कि ऐसा होना चाहिए तो जरूर होगा।

- विश्वास और यकीन कितनी सुदृढ़ शिक्षा है, ईश्वर से किसी हालत में निराश नहीं होना चाहिए।

विभिन्न कथन

1. अपनी वज़ा पर कायम रहो।

(अपने जीवन-यापन का सदैव एक ढंग स्थिर रखें।)

2. अगर सात दिन का उपवास हो तो भी जबान पर न लावें और ईश्वर से भी न कहें, क्या वह नहीं जानते जो अपने पास है।

3. जब फाकें हों तो सहन करें।

4. बात तो जब है कि साँस खाली न जाये। लोगों ने पूछा किससे साँस खाली न जाए तो वारिस पाक ने कहा ईश्वर से।

5. बड़ी फकीरी यह है कि हाथ कभी न फैले, निर्लोभी होकर रहें। ईश्वर की दी हुई दशाओं और अपनी मर्जी पर स्थिर रहें। गंडा-ताबीज, दुआ-बद्दुआ इत्यादि का बिल्कुल प्रयोग न करें,

यह फकीरी है।

6. हाजी अवधट शाह ने हुजूर से कहा “रौय्यद की पहचान लोग ये बताते हैं अगर उनके हाथ पर आग रख दी जाये तो हाथ न जले।” आपने उत्तर दिया सच है किन्तु जो इम्तिहान लेगा वह काफिर होगा।
7. जिसने यहाँ ईश्वर का दर्शन नहीं किया वह महाप्रलय के पश्चात भी ईश्वर दर्शन की अनुभूति नहीं कर सकेगा।
8. इस सृष्टि का नाम संसार नहीं बल्कि भूल का नाम दुनिया है।
9. इस्लाम और चीज है ईमान और चीज़ है।
10. फकीर वह है जो किसी के समक्ष हाथ न पसारे।
11. एक सूरत को पकड़ ले वही मरते वक्त, वही कब्र में, वही हश्र में काम आयेगी।
12. बड़ी फकीरी यह है कि दस आदमियों को रोटी देकर खायें। यह बात सरकार ने नादिर हुसैन वारसी नग्रामी से फरमाया।
13. पीर (गुरु) बहुत है मुरीद (चेला) बहुत मुश्किल से मिलता है।
14. मुरीद (चेला) होना चाहिए, मुरीद अर्थात् चेला होगा तो पीर (गुरु) की छाती पर सवार होकर प्राप्त कर सकता है।
15. “फकीरों में बनावट नहीं है और सांसारिक व्यक्तियों में बनावट होती है।”
16. जिसका जो अंश होता है उसको अवश्य दिया जाता है। जीवन में या मरते समय और नहीं तो उसके कब्र में ठूंस दिया जाता है।
17. अयोध्या वाले राम जी अवतार थे। श्रीकृष्ण जी प्रेमी थे और बाबा नानक साहब पक्के अद्वैतवादी थे।
18. जो नशीब-फराज अर्थात् उतार चढ़ाव में रहेगा, उसको ईश्वर का दर्शन नहीं मिलेगा। जो उतार चढ़ाव से निकल जायेगा उसका निर्वाण (मोक्ष) संसार में ही हो जायेगा।

सरकार आलम पनाह (वारिसे पाक) के खादिम खास

हज़रत फैजू शाह वारसी रहमतउल्ला

किबला हज़रत हाजी फैजू शाह वारसी की पैदाइश दिनांक 28 मार्च, सन् 1827 ई० में आपके आबाई वतन मौज़ा बेहमा ज़िला सीतापुर में

हुई। आपके पिता का नाम श्री मुन्नू मियाँ था।

श्री मुन्नू मियाँ गाँव के निहायत संजीदा आदमी थे जिनका आबाई पेशा खेती था। फैज़ अहमद उफ़ फैज़ू शाह का ध्यान वचपन से घरेलू काम में नहीं लगता था। उनका रुझान दुनिया से कुछ अलग ही था, कुछ दिनों के बाद आप अपने ननिहाल बनेहरा बीरबल चले आये जो सीतापुर जिले में वाके से बेहया से तकरीबन एक मील की दूरी पर है ये शुरू से ही नमाज़ रोज़े के पाबन्द थे। उन्होंने 20 वर्ष की आयु में पैदल हज़ किया।

1856 ई० में फैज़ू शाह वारसी घर से बगैर बताये निकल पड़े और तलाशे पीर विभिन्न जगहों जैसे अजमेर, कलियर, देहली, बम्बई, पानीपत की मजारों की ज़ियारत करते हुए पैदल सफर करके वहराइच शरीफ हज़रत से, मसऊद गाज़ी रह. के आरत्ताने पर हाजिर हुए हर जगह की तरह यहाँ पर भी वहाँ के ख़ादिम से अपनी ख्वाहिश ज़ाहिर करते हुए अर्ज किया कि आपको मुझको मुरीद करके अपना बना लें और मुझे तालीम दें ताकि मैं हिदायत वाला रास्ता पा सकूँ क्योंकि मैं तलाशे पीर दर-बदर भटक रहा हूँ।

वहाँ के ख़ादिम ने उनकी बात सुनी और मुस्कुरा कर जवाब दिया बेटे यह मुझसे हरगिज़ न होगा मैं तुमको अपना नहीं बन सकता हूँ क्योंकि तुम्हारा हिस्सा तो अवध में एक मकाम देवा शरीफ है जहाँ हज़रत हाज़ी हाफ़िज़ सैय्यद वारिस अली शाह (रह.) मौजूद हूँ तुमको सब कुछ वहाँ से अंता होगा इसलिए तुम वहीं जाओ अब दरबदर मत भटको बस आप खुसी से झूमते हुए दीदारे वारिस पाक के लिए अवध की तरफ चल दिये। लखनऊ पहुँचकर इन्होंने देवा शरीफ का रास्ता लोगों से पूछा मगर देवा शरीफ का रास्ता किसी ने भी नहीं बताया बल्कि यह कहा कि यहाँ से 16 मील की दूरी पर एक कस्बा बाराबंकी है आप वहाँ चले जायें हो सकता है कि वहाँ से आपको मालूम हो जाय आप बाराबंकी के लिए रवाना हुए बाराबंकी आकर लोगों से देवा शरीफ के बारे में दरयापत किया लोगों ने बताया कि हाँ यहाँ से 7 मील की दूरी पर एक छोटा सा गाँव देवाँ-देवाँ है आप फौरन देवाँ के लिए रवाना हुए और 5 वर्ष पैदल सफर करने के बाद वर्ष 1861 ई० में दोपहर 12 बजे देवा आ गये। आने के बद फैज़ू शाह

हज़रत हाफिज सै. वारिस अली शाह (रह.) का नामे नामी लोगों से पूछने लगे मगर यहाँ पर इस बुजुर्ग का उस वक्त तक ये नाम किसी को भी नहीं मालूम था बल्कि आप मिट्ठन मियाँ के नाम से मशहूर थे इसलिए किसी ने भी नहीं बताया आप निराश होकर सोचते हुए आखिर में वहाँ पर आये जहाँ इस वक्त इमामबाड़ा बना हुआ है। यहीं पर एक पुरानी इमली का वृक्ष था। जिसकी जड़ पर एक वृद्ध बैठी हुई थी हज़रत फैजू शाह ने उनकी उम्र को देखकर विचार किया कि हो सकता है कि इनको मालूम हो हाजी फैजू ने उस वृद्ध माता से पूछा कि ऐ माँ क्या यहाँ कोई सै0 हाजी हाफिज वारिस अली शाह नाम के कोई बुजुर्ग रहते हैं। बूढ़ी माँ ने उत्तर दिया नहीं बेटे बल्कि एक मिट्ठन मियाँ नाम के एक बुजुर्ग हैं वह भी हमको बुजुर्ग ही लगते हैं तुम वहाँ जाकर मालूम कर लो वो सामने की झोपड़ी में लेटे होंगे जो अब दिन में 2 बजे बजे खुलेगी यह झोपड़ी वहीं पर थी जहाँ अब किबला आलम पनाह आराम फरमाँ हैं। फैजू शाह मियाँ दो बजे की प्रतीक्षा करने लगे वक्त आया और दो बज गया झोपड़ी का दरवाज़ा खुला और फैजू शाह ने अन्दर प्रवेश किया। आलम पनाह देखते ही मुरक्कुराकर बोले क्या फैजू बहराइच के खादिम ने मुरीद नहीं किया इतना सुनते ही फैजू शाह आलम पनाह की खिदमत में हाजिर होकर कदमों पर गिर पड़े सरकार ने शफक़त का हाथ फेरा और फरमाया तुम हमारे हो हमारे हो अब कहीं मत जाना फैजू शाह ने बेहद खुश होकर सिर उठाया और बोले सरकार, आपका ये सब करम है वरना।

“मैं कहाँ दामने सरकार कहाँ।”

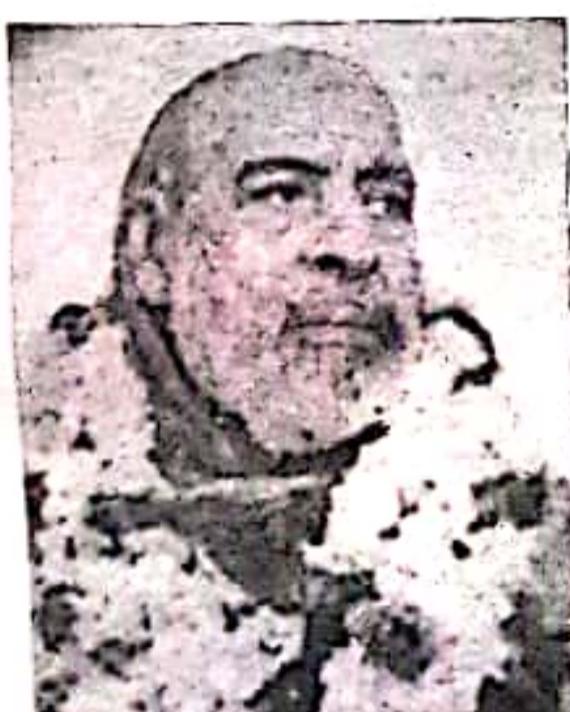
आलम नवाज़ की नवाज़िश करम कि आपने फरमाया सुनो फैजू आज से तुम हमारी खिदमत करो और रोज़ाना अपनी माँ को सलाम करने जाया करो फैजू शाह ने जवाब दिया जो सरकार का हुक्म बन्द नाचीज़ आपके करम से अंजाम देगा सरकार आलम पनाह को बाद नमाज़ फ़जिर नाश्ता कराने के बाद फैजू शाह अपने ननिहाल बनेहरा जो देवाँ से 12 कोस की दूरी पर है वाल्दा को सलाम करने के लिए पैदल चल देते थे और बड़े इतमेनान दोपहर 12 बजे बनेहरा पहुँच जाते और ज़ोहर की नमाज़ फैजू शाह बनेहरा अपनी बगिया में पढ़ते बाद ज़ोहर वहाँ से चलते

असिर की नमाज़ रास्ते में अदा करते और मगरिब की नमाज देवा शरीफ में सरकार के साथ पढ़ते यह काम बिला नागा 12 वर्षों तक अन्जाम दिया और जब बाल्दा की मृत्यु हो गई तब सरकार आलम नवाज़ ने 1873 ई० में फैजू शाह को एहराम अंता करके नाम फैजू शाह वारसी रखा और फरमाया कि तुम फैजू हमारे बहुत ही खास हो और तुम ही हमारे राज़दार हो और तुम वारसियत को बुलन्द करोगे और तुम्हारे ज़रिये एक बहुत बड़ा काम होगा जिसके सबब तुम मसलके वारसी में खादिम ए खास के लक़ब से पुकारे जाओगे। फैजू शाह ये जुम्ले (वाक्य) सुनकर बेहद खुश हुए सिर झुकाकर अर्ज किया सरकार सब आपकी नज़रे करम है।

बतारीख 22 ज़ीक़ादा 1358 हिजरी मुताबिक 13 जनवरी 1937 ई० 9 पूस 1344 फसली दिन जुमेरात बवक्त 11 बजे दिन में हज़रत हाजी फैजू शाह वारसी ने 110 वर्ष की आयु में देवाँ शरीफ में परदा फरमाया सरकार आलम पनाह वारिसे पाक की आज्ञानुसार हाजी फैजू शाह वारसी बनेहरा में अपनी बगिया में आराम फरमाँ हैं।

बाबा अवघट शाह रहमतउल्लाह

घट घाटीं घाट न अवघट जाने, न जाने कवनो राह।
कृपा भई गुरु वारिस की, जो हो गये अवघट शाह॥



आप का पूर्व नाम शाह बदरुद्दीन था। आपके पिता का नाम शाह शमसुद्दीन था। आपके पिता शाह शमसुद्दीन साहब कादरी चिश्ती साबरी रहे। अपने समय के विख्यात संत और फ़कीर थे। आपके पिता अपने गुरु के आदेश से बारह वर्ष तक भ्रमण करते रहे आपके पिता हिन्दू सन्तों के बीच में भी काफी समय तक रहे। भ्रमण के पश्चात जब लौटे तो गुरु ने आदेश दिया कि पीराने पीर कलियर शरीफ में हाज़िरी दो बारह रबीउल अव्वल को बारह वजे रात्रि में जो बुजुर्ग मजार शरीफ पर मिले उनके शिष्य हो जाओ। अतः हज़रत शाह शमसुद्दीन ने ऐसा ही किया किन्तु उस बुजुर्ग ने बड़ी मुश्किल से वैय्यत लिया और सैय्यदना साविर रहे के मजार की

दिया कि पीराने पीर कलियर शरीफ में हाज़िरी दो बारह रबीउल अव्वल को बारह वजे रात्रि में जो बुजुर्ग मजार शरीफ पर मिले उनके शिष्य हो जाओ। अतः हज़रत शाह शमसुद्दीन ने ऐसा ही किया किन्तु उस बुजुर्ग ने बड़ी मुश्किल से वैय्यत लिया और सैय्यदना साविर रहे के मजार की

ओर संकेत कर कहा इनके सुपुर्द हो। उसी रात शाह शमसुद्दीन ने एक छन्द रचा जिसका प्रथम पद है।

निछावर अपने मुर्शिद पर कि जिसने हमको दिखलाया।

जमाले आरिजे जेवा अलाउद्दीन साबिर का ॥

जब आपके पिता की अन्तिम वेला आई तो शाह बदरुद्दीन साहब ने आपसे बैख्यत करने का आग्रह किया आपने कहा मेरे पास जो तुम्हारा हिस्सा है वह तो तुमको अवश्य मिलेगा किन्तु मैं तुमको शिष्य नहीं करूँगा तुम सैख्यद वारिस पाक के शिष्य बनो। यदि तुमने ऐसा नहीं किया तो क़यामत में तुम्हारा दामनगीर हूँगा। इस ज़माने में उनके अतिरिक्त कोई फ़कीर नहीं है। हाँ बुजुर्ग तो बहुत हैं और शाह साहब ने नश्वर शरीर त्याग दिया बदरुद्दीन साहब कहते हैं धीरे-धीरे ये बात मेरे ज़ेहन से निकल गई एक दिन मुझे स्वप्न में वारिस पाक दिखे मैंने अपने मन में स्वप्न का अर्थ लगाया कि संकेत शिष्य बनने की ओर है और प्रथान कर देवा शरीफ पहुँचा शिष्य हो गया। फिर शाह वलायत की खानकाह (कुटी) में विश्राम के लिए रुका मेरे मन में ये शंका हुई कि वारिस पाक शिष्य करना नहीं जानते सबके सामने मुझको शिष्य किया है जबकि यह कार्य एकान्त में होता है मैंने अपनी शंका शाह फ़ज़्ले हुसैन साहब से व्यक्त की उन्होंने कहा कि तुमने फ़कीर कहाँ देख हैं हाँ तुम्हारे पिता जरूर बड़े फ़कीर थे। उनके शंका निवारण से मेरा भ्रम मिटा। मैं मारे भय के वारिस पाक के सामने नहीं गया शाह फ़ज़्ल हुसैन साहब के कहने पर मैं सरकार में उपरिथित हुआ सरकार मुझे देखकर मुरक्कुराये और कहा जाओ बछरायूँ में हमारे बहुत से चेले हैं हाल ये था कि उस समय बछरायूँ में केवल दो शिष्य थे एक कादरी साहब दूसरे हाफ़िज अब्दुल मजीद साहब किन्तु इस कथन के पश्चात दो सौ से अधिक चेले हो गये फिर मुझे फ़कीरी वस्त्र देकर कहा किसी से सवाल न करना चाहे दम निकल जाये और अपने पिता की समाधि पकड़े रहना यदि तुम यहाँ न आते तो वो क़यामत में तुम्हें पकड़े-फ़कड़े फिरते फिर उपरिथित लोगों से कहा ये खानदानी फ़कीर है और आपका नाम अवघट शाह रखा आपने बहुत से सुन्दर दोहों की रचना की।



किताब के लिए संपर्क करें वारसी नगीने वाले मुइन अहमद वारसी 9451613244

जो सब की मुश्किल में काम आवे, करे गरीबों की दस्तगीरी
लगाये बेड़ा जो पार अवघट, नहीं है कोई सिवाये वारिस



आस्ताना शरीफ
सम्पद हाजी हाँ वारिस अली शाह
की वाल्दा और नाना की मजार



आस्ताना शरीफ
सम्पद हाजी हाँ वारिस अली शाह
के वलिद हुजूर की मजार

या वारिस



आस्ताना शरीफ
सम्पद खादिम अली शाह
मरकार के उस्ताद

हुक वारिस

**सुना सुना
मोहब्बत करो!**

मूल्य 20/-

संकलन: मनीष मेहरोत्रा वारसी

उच्चकोटि की पुस्तकों के प्रकाशक

अनन्या प्रकाशन **लखनऊ** **बाराबंकी**

मोबाइल : 9795377707, 9369711465